लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान

मेहराब खाँ

सहायक–आचार्य–राजनीति विज्ञान
एस.बी.के. राजकीय महाविद्यालय जैसलमेर

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के जनक, साहसी पत्रकार, आधुनिक भारत के कौटिल्य, महान षिक्षा शास्त्री, उत्कृष्ट तर्कषास्त्री, विद्वान विचारक एवं दार्षनिक, व्यावहारिक समाज सुधारक, मानवतावादी, कुषल संगठनकर्ता, उदार परम्परावादी एवं दृढ निष्चयी व्यक्तित्व के धनी थे।

लोकमान्य तिलक का योगदान भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में 'गांधी युग' 1915 से प्रारम्भ हुआ और 'गांधी युग' प्रारम्भ होने से पूर्व के 25 वर्षों में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन एवं राजनीतिक चिन्तन में सबसे अधिक एवं प्रभावी योगदान लोकमान्य तिलक का रहा हैं। उनके इस महान योगदान का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के माध्यम से किया जा सकता हैं :–

1– **राजनीति में यथार्थवादी एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण के समर्थक** – राजनीति में तिलक का दृष्टिकोण यथार्थवादी था और वे अनुभव एवं समय की आवष्यकतानुसार अपनी नीतियों में व्यावहारिक संषोधन करने में विष्वास रखते थे। अपने यथार्थवादी चिंतन के अनुरूप तिलक ने सर्वप्रथम भारत में राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिये राष्ट्रीय षिक्षा संस्थाओं की स्थापना की और लोक षिक्षण के लिए समाचार पत्रों का प्रकाषन शुरू किया। ब्रिटिष शासन की फूट डालकर शासन करने की नीति से प्राप्त कटु अनुभवों के प्रकाष में तिलक ने साम्प्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकता पर बल दिया। उन्होने राजनीति में ऐसे सभी साधनों को उचित माना जिनकी मदद से औचित्यपूर्ण साध्य की प्राप्ति संभव हो। अपनी इस विषेषता के कारण तिलक को 'आधुनिक कौटिल्य' कहा जाता हैं।

2– **स्वराज्य की विस्तृत अवधारण का प्रतिपादन** – यद्यपि सिद्धान्त में स्वराज्य की भावना का सर्वप्रथम प्रतिपादन स्वामी दयानन्द ने किया, किन्तु स्वराज्य की एक विस्तृत, सामयिक, सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक अवधारणा का सर्वप्रथम प्रतिपादन करने का श्रेय तिलक को जाता हैं। तिलक का स्वराज्य से आषय पूर्ण स्वतंत्रता से था। यद्यपि उन्होंने 1915 से गृह–षासन को अपना लक्ष्य घोषित किया, किन्तु उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति के लक्ष्य को कभी त्यागा नहीं। यह उल्लेखनीय हैं कि यद्यपि तिलक ने गुलाम भारत के लिये स्वराज्य को एक साध्य माना था, किन्तु वास्तव में वे इसे भारत एवं भारतवासियों के सर्वांगीण उत्थान का एक भावात्मक साधन भी मानते थे। तिलक की स्वराज्य की अवधारणा सम्पूर्ण भारतीयों के लिए थी।

3– **राष्ट्रीयता का आधार भारतीयता** – तिलक ने दयानन्द की तरह अपने राष्ट्रवादी चिंतन का आधार भारत की प्राचीन वैदिक सभ्यता व संस्कृति की महानता को बनाया तथा उसे आधुनिक भारत के संदर्भ में संषोधित व संवर्धित किया। उन्होंने उदारवासियों के इस मत का तीव्र विरोध किया कि ब्रिटिष शासन भारत के लिए ईष्वरीय वरदान हैं और उसके अधीन रहना भारतीयों का सौभाग्य हैं अथवा भारत के लिये पाष्चात्य सभ्यता, संस्कृति एवं जीवन मूल्य अनुकरणीय हैं और ब्रिटिष शासन की मदद से ही भारत का एक राष्ट्र के रूप में पुनर्निर्माण संभव हैं। इसके विपरीत तिलक ने प्राचीन भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा जीवन मूल्यों की महानता के बारे में जनमानस में आत्म गौरव एवं स्वाभिमान की भावना जागृत की।

4– **राजनीतिक साधनों की दृष्टि से नये युग की शुरूआत** – भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में तिलक का एक प्रमुख योगदान राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रभावषाली साधन प्रदान करना हैं। तिलक से पूर्व कांग्रेस के उदारवादी नेतृत्व ने संवैधानिक साधनों का प्रयोग किया था, जो पूर्णतः प्रभावहीन सिद्ध हुये थे। उन्होंने राष्ट्रीय षिक्षा संस्थाओं की स्थापना द्वारा एक ऐसी पीढ़ी तैयार करने की चेष्टा की जो राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना से ओत–प्रोत हो, राष्ट्र सेवा के दृढ संकल्प वाली हो और भारतीय जनता में राष्ट्रीय चेतना एवं स्वराज्य की भावना का विस्तार करने में समर्थ हो। इसके साथ ही तिलक ने स्वदेषी, बहिष्कार एवं निष्क्रिय प्रतिरोध के रूप में खुले राजनैतिक साधनों को अपनाया क्योंकि ये साधन प्रत्यक्ष रूप से कानून की सीमा का उल्लंघन नहीं करते थे।

5– **कांग्रेस एवं राष्ट्रीय आन्दोलन के चरित्र में गुणात्मक परिवर्तन** – प्रारम्भ से ही तिलक को कांग्रेस का उदारवादी चरित्र पसन्द नहीं था। 1906 में तिलक को तब ऐतिहासिक सफलता प्राप्त हुई, जब वे उदारवादी गुट के विरोध के बावजूद कांग्रेस से स्वराज्य के प्रस्ताव को पारित कराने में सफल हुये। इसके बाद 1916 में ही तिलक को कांग्रेस की नीतियों को प्रभावित करने का मौका प्राप्त हो सका और 1920 तक कांग्रेस एक पूर्ण जुझारू राष्ट्रीय संस्था में बदल गई। तिलक की इच्छा का आदर करते हुए कांग्रेस ने प्रत्युत्तात्मक सहयोग की शर्त पर 1919 के सुधार अधिनियम को स्वीकारा।

ऐतिहासिक दृष्टि से कांग्रेस को एक नरमपंथी एवं ब्रिटिष भक्त संस्था से एक गरमपंथी एवं ब्रिटिष शासन से संघर्ष करने वाली संस्था के रूप में परिवर्तित करने का श्रेय तिलक के तेजस्वी व्यक्तित्व एवं उनके राष्ट्रवादी चिंतन एवं कार्यों को जाता हैं। तिलक का जीवन गीता के निष्काम कर्म योग का जीवन्त उदाहरण था। उनकी कथनी व करनी में अंतर नहीं था। वे राजनीतिक विवेक तथा दूरदृष्टि के धनी थे तथा उनके लिए राष्ट्रीय सेवा का व्रत ऐसा धार्मिक अनुष्ठान था जिसकी पूर्ति के लिए वे बड़े से बड़े त्याग एवं कष्ट को छोटा मानते थे। वे आधुनिक भारत के सर्वप्रथम तथा सर्वाधिक प्रभावषाली व लोकप्रिय राष्ट्रीय नेता थे।

6– **महान लोकतंत्रवादी** – तिलक महान लोकतंत्रवादी थे। तिलक सन् 1919 ईस्वी के भारतीय शासन अधिनियम के आधार पर परिषदों में प्रवेष करने के कार्यक्रम को स्वीकार कर चुके थे। उनका कहना था कि सुधार अधिनियम अनेक दृष्टि से अपर्याप्त होने पर भी देष के राजनीतिक आन्दोलन की सफलता का द्योतक हैं, यह सफलता कितनी ही सीमित क्यों न हो।

7– **दूरदर्षी राजनीतिज्ञ** – लोकमान्य तिलक अत्यंन्त उच्च कोटि के दूरदर्षी राजनीतिज्ञ और भारतीय राष्ट्र के महान निर्माताओं में हैं। सन् 1896–97 में ही वे स्वराज्य की बात करने लगे थे और 1907 में ही उन्होंने 'होम रूल' का उल्लेख किया। वे हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा मानते थे। कांग्रेस लोकतांत्रिक दल के घोषणा–पत्र में उन्होंने रेल मार्गों के राष्ट्रीयकरण के सिद्धान्त को स्वीकार किया और राजनीति को धर्म–निरपेक्षता के आधार पर खड़ा करने की आवष्यकता बतलाई, उन्होंने भारतीय श्रमिक आन्दोलन के राजनीतिक महत्व को स्वीकार करके बुद्धिमानी और दूरदर्षिता का परिचय दिया था।

8– **सामाजिक–आर्थिक न्याय के प्रणेता** – 1895 से ही और अधिक गहरे रूप में सन् 1905 से वे भूमिहीन कृषकों और श्रमिकों की दयनीय स्थिति में सुधार की तीव्र आवष्यकता अनुभव करने लगे। 19 वीं सदी के अंतिम वर्षों में अकाल व प्लेग की परिस्थितियों में तथा जीवनपर्यन्त जनता के दुःख–दर्द को उन्होंने अपना दुःख–दर्द समझा। वस्तुतः वे समाजवाद या साम्यवाद के प्रति नहीं, वरन् समाज के सबसे अधिक कमजोर व्यक्तियों के कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध थे।

सांराश रूप में कहा जा सकता हैं कि भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में लोक मान्य बालगंगाधर तिलक का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण हैं तत्कालीन राजनीति में उनके प्रवेष ने राष्ट्रीय आन्दोलन की दिषा को ही बदल दिया और राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में एक नये युग की शुरूआत की जिसे भारतीय राजनीति का उग्रवादी युग कहा जाता हैं। आम जनता से विमुख, पाष्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति से प्रभावित और ब्रिटिष नौकरषाही के सहारे रेंगने वाली, उदारवादी राजनीति राष्ट्रीय आंकाक्षाओं की प्राप्ति में जब असफल सिद्ध हुई और राष्ट्र निराषा के अंधकार में डुबने लगा तब तिलक ने राष्ट्रीय चेतना एवं आकांक्षाओं को नये आयाम देकर भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को भरपूर योगदान दिया।

संदर्भ :–

1– डॉ. मधुकर श्याम चतुर्वेदी – प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, पृष्ठ 288–290
2– प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक– साहित्य भवन पब्लिकेषन आगरा डॉ. पुखराज जैन पृष्ठ– 166
3– वी. पी. शर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन पृष्ठ– 252